

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग III—ज्ञण्ड 1 PART III—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 13] No. 13] नई विल्ली, गुकवार, मई 25, 1984/ण्येष्ठ 4, 1906 NEW DELHI, FRIDAY, MAY 25, 1984/JAYAISHT 4, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संस्था वी जाती है जिससे कि यह असम संकलन के कप में रका का सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

कार्यालय, सहायक आवकर आयक्त

(निरीक्षण) अर्जन रेंज कानपुर

[आधकर अधिनिधम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269 घ (।) के अधीन सुचनाएं]

कानपुर, 18 मई, 1984

निदेश मं० एस-20/84-85:— मतः मृद्धे ने० पी० हिलोरी, प्रायकर प्रिष्ठियम, 1961 (1961 का 43) (निसे इसके परवात् 'उक्त प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (निसे इसके परवात् 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की घारा 269ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उजित बाजारमूल्य 25000 से प्रधिक है और जिसकी मं० 2172 है नथा जो गाजिपाबाद में स्थिन है (प्रीर तसने उपायत प्रनुत्वी में प्रीर प्रथिष प विजित्त है), रिजस्ट्रीकर्ता प्रधिकारों के कार्यालय गढ़मुक्तेश्वर में, रिजस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन नारिख 9-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के बृश्यमान प्रतिफल के लिए मन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य से उसके दृश्यमान प्रतिफल के पन्तर प्रथित से प्रधिक है. श्रीर मन्तरक (भ्रत्यकों) और मन्तरिती (भ्रन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल निम्नलिखन नहीं किया गया है।

(क) प्रान्तरण से हुई किसी ग्राय की वासत, श्रायकर प्रधितियस, 1961 (1961 का 43) के ग्राधीन कर देने के ग्रान्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे अवने में सुविधा के लिए भीर/बा

(ख) ऐसे किसी भाय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय भायकर अधिनियम 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या अन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, दियाने में मुविधा के लिए

भ्रतः घव उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं ु उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के अधीन निम्न-निश्चित व्यक्तियों अर्थात् '---

- श्री काले पृष्ठ ननवा, (झन्तरक) निवासी ग्राम, झठवैती, पर० व तहर गढ़, जिर् गाजियाबाद
- श्री जरीफ पुत्र ईशहाक एवं भ्रन्य (ग्रन्तिन्ती) ग्राम० भ्रष्ठतैनी, पर० तह्० गढ़ जि॰ गाजियाबाद ।
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी अन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग मे सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्यन्ति के भ्रजेन के लिए कार्यवाहिया शुरू करता हूं। उक्त सम्पन्ति के भर्जन के सम्बन्ध में कोई भी साक्षेप :~~

- (क) इस मुधना के राजपत्न में प्रकाणन की नारीख से 45 दिन की भवधि, या तत्मन्यत्थी व्यक्तियो पर सुजना के नामील में 30 दिन की भवधि, जो भी भवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पुर्वोक्त अपक्लियों में में किमी अपक्लि के द्वारा।
- (सा) इस सुचना के राजपक्ष में प्रकाशन की नारीख के 4.5 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनवड़ किसी भन्य व्यक्ति द्वारा अधोहस्ताक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त शब्दों भीर पदों का, अं। आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के ब्रध्याय 20-क में परिभाषित है, वही धर्म होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुनुस्र

खेती स्थित ग्राम---ग्रठमैनी, परः व तहः गृहः, जिः ---गाजियाबादः।

तार्थक : 18-5-84

संहर:

OFFICE OF THE INSPECTING ASSISTANT COMMISSIONER OF INCOME-TAX, ACQUISI-TION RANGE, KANPUR

NOTICES UNDER SECTION 269-D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961) Kanpur, the 18th May, 1984

Ref. No. M-20|84-85.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000- and bearing number AS PER SHHEDULE situated at AS PER SCHEDUŁE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Garh Mukteshwar on 9-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of

this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:-

- 1. Shri Kale, So Shri Nanwa, Village Athsaini, Pargana and Tehsil-Garh, Distt. Ghazia-(Transferor)
- 2. Shri Jarif, So Sh. Ishaq and others, Village Athsaini, Pargana and Tehsil—Garh, Distt. (Transferee) Ghaziabad
- 3. Shri -do- (Persons in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agriculture land situated at Village, Athsainí. Pargana & Tch.-Garh, Distt. Ghaziabad.

Date: 18-5-84

Seal:

निदेश नं ० एम-1588/83-84:--- मन: मुझे जे० पी० हिलोरी, ग्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उक्त ग्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269-खंके प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मध्य 25,000 - से प्रधिक है भीर जिसकी सं० 9553 है तथा जो मेरठ में स्थित है (भीर इससे उपावत प्रनमुखी में भीर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता ध्रधिकारी के कार्याणय मेरठ में, रजिस्ट्रीकरण मधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन ·तारीख 16-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के अचित बाजार मृत्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अस्तरित की ग़ई है भीर मुझे यह विष्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उखित बाजार मृस्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से. ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से प्रधिक है और ब्रस्तरक '(ब्रन्तरकों) भीर ब्रन्तरिती (ब्रन्तरियों) के श्रीच ऐसे ब्रन्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिकल निम्नलिखित, उद्देश्यों से युक्त ग्रम्तरण, लिखिल में बास्तविक रूप से कवित नहीं किया गया है।

- (क) अल्लरण से हुई किसी ग्राय की बाबन, श्रायकर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के ग्रन्तरक के दायित्व से कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए
- (ब्रू) ऐसे किसी ग्राय या किसी धन या चन्त्र भारिनयों की जिन्हें भारतीय भावकर भविनियम, 1922 (1922 का 11) सा

श्रायकर श्रक्षिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर श्रक्षिनियम, 1957 (1957 का 27) के श्रयोजनाथं श्रन्तरिती द्वारा श्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

श्रातः श्राव उक्त श्रश्चितियम की धारा 269-ग के श्रनुसरण में, मैं उक्त श्रश्चितियम की धारा 269-घ की उपधारा (1) के श्रश्नीन, निस्त-लिखित व्यक्तियों भ्रथित:—

- 1. श्री पवन कपूर, पुक्ष स्वर्० श्री ज्ञान (प्रस्तरक) चन्द कपूर, 2.17, गली नं० 5, थापर नगर, मेरठ एवं भ्रन्य
- 2. श्री प्रवीप कुमार गुण्ना एवं घन्य, (भरतिनी) पुत्रमण-श्री बी० डी० गुष्ता, नि० 169 एवं 170, पटेल नगर, मेरठ।
- अं।/श्रीमती / कुमारी अन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके अधिभाग में सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के लिए कार्यवाहियां गुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप .---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 विज की प्रविधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियां पर सूचना की तामील से 30 दिन की धविधि, जो भी श्रविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूखना के राजपत्न में प्रकाशन की तारीख के, 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितवह किसी प्रन्य व्यक्ति द्वारा अश्रीहरूनाक्षरी के पास लिखिल में किए जा सकते।

. स्वब्दीकरण:--इसमें श्रयुक्त शब्दों भीर पदों का, जो श्रायकर म्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के भ्रष्ट्याय 20क में परिभाषित है, वहीं भर्ष होगा जो उस ब्रध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

म॰ नं॰ 200/7 (पुराना) नमा नं॰ 217, गली नं 5, बापर नमर, मेरठ।

नारोख: 18-5-84

मोहर:

[जी लागुन हो। उसे काट दी जिल्]

Ref. No. 1588|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25.000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Meerut on 16-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has

not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :---

(a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

- 1. Shri Pawan Kapoor, So Late Sri Gyan : hand Kapoor, 217, Gali No. 5, Thaper Nagar, Meerut and others. (Transferor)
- 2. Shri Pradeep Kumar Gupta and others, S|o Shri V. D. Gupta, No. 169 & 170, Patel Nagar, Mecrut (Transferee)
- S|Shri --do-- (Persons in occupation of the property).
- 4. S|Shri —do— (Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House No. 200/7 (Old) and No. 217 (New), Gali No. 5, Thaper Nagar, Meerut.

Date: 18-5-84

Scal:

निवेश नं ए.स. 1581/83-84: — अतः मुझे जे पी हिलोगी, आय-कर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उकत् अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269-ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- में अधिक है और जिसकी सं 19/36-37 है नभा जो गाजियाबाद में स्थित है (और इसमें उपाबद धनुसूची में और पूर्ण कप से विणित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कायावय गाजियाबाद में, रजिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के घ्रधीन तारीख 22-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिकल के लिए प्रन्तरित की गई है भीर मुझं यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिकल के पन्त्रह प्रतिशत से धिक है भीर धन्तरक (प्रन्तरकों) भीर धन्तरिती (धन्तरियों) के बीच ऐसे प्रन्तरण के लिए लय पाया गया प्रतिकल निम्नलिखित, उद्देश्यों से युक्त प्रन्तरण, लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी प्राय की बाबत, श्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रश्नीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए प्रीर/या
- (च) ऐसे किसी माय या किसी धन या अन्य भ्रास्तियों की जिन्हें भारतीय भ्रायकर श्रिधिनियम, 1922 (1922 का 11) या भ्रायकर श्रीधिनियम, 1961 (1961 का 43) या अन-कर श्रीधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भन्तरिती श्रारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना श्राहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

मतः प्रव उक्त प्रधिनियम की धारा 269-ग के भ्रमुसरण में, मैं उक्त प्रधिनियम की धारा 269-म की उपधारा(1) के प्रधीन, निस्त-सिचित व्युक्तियों प्रधीत:—

- 1. श्री भुमत प्रसाद जैन, (श्रम्तरक) नि॰ एस जै-13, शास्त्री नगर, सेक्टर-16, गाजियाबाद।
- 2. श्री महेन्द्र मिंह राठी, पुत्र श्री मंगत सिंह (घन्तरिती) द्वारा श्री इन्द्र पाल सिंह, नि० एसएच-265, शास्त्री नगर, गाजियानाद।
- श्री/श्रीमती[क्रुमारी मन्तरिती (बह व्यक्ति, श्रिसके प्रधिभोग में सम्पक्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के मर्जन के लिए कार्यवाहियां सुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के मर्जन के सम्बन्ध में कीई भी माझप:---

- (क) इ.स. सूचना के राजपल में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की प्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की सामील से 30 दिन की प्रविध, जी भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (धा) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के मीतर उक्त स्थापर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी प्रन्य व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमें प्रयुक्त सम्बीं ग्रीर पदों का, जो ग्रायकर ग्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के मञ्जाय 20-क में परिभाषित हैं, वहीं ग्राम्य होगा जो उस ग्रष्ट्याय में दिया गया है।

अनुसूची

मकान नं० एसजे-13; सेक्टर् 16, शास्त्री नगर, गाजियाबाद ।

सारी**च** : 18-5-84

मोउर

जो लागून हो उसे काट दीजिए

Ref. No. M-1581 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ghaziabad 22-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. Shri Sumat Prasad Jain, Ro SJ-13, Shastri Nagar, Sector—16, Ghaziabad (Transferor)
- Mahendra Singh Rathi, S|o Shri Mangat Singh, through Shri Indrapal Singh, R|o SH-265, Shastri Nagar, Ghaziabad (Transferee)
- 3. S|Shri —do— (Persons in occupation of the property).
- 4. S|Shri—do—(Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

House No. SJ-13, Sector 16, Shastri Nagar, Ghaziabad.

Date: 18-5-84

Scal:

निदेश नं एम-1912/83-84:— अतः मुझे जे पी हिलांरी, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 45) (जिसे इसके पण्यात् 'उनत
अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अधीन सक्षम प्रधिकारी
को यह विश्वास करमें का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उजिन
बाजार मूल्य 25,000/- से अधिक है और जिसको सं 5391 है तथा
जो जिला— मेरठ में स्थित है (और इससे उपायद्ध मन् सूची में भी पूर्ण
क्षा से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय मवाना में,
रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अधीन तारीख
11-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान
प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का
कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान
प्रतिफल से, एसे दृश्यमान प्रतिफल के पज्रह प्रतिशत्त से अधिक है, और
अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे अन्तरण
के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखत उद्देश्यों से युक्त मन्तरण,
लिखित में बास्तिक रूप से किथल नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण से हुई किसी भाग की बाबत, आयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कभी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए भौर/मा
- (था) ऐसे किसी प्राप्त या किसी धन या प्रत्य आस्त्रियों की जिन्हें भारतीय प्रायकर प्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या प्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर प्रधिनियम 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनायं भन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

धतः ध्रम उक्त घ्रधिनियम की घारा 269-ग के प्रनुसरण में, मैं उक्त घ्रधिनियम की धारा 269-घ की उप धारा (1) के घ्रघीन, निम्न-लिखित व्यक्तिमों भर्षात्:—

- श्री मुशारिक दुसैन, पुक्त श्री प्रहमद (प्रन्तरक)
 इसैन एवं घर्य, ग्राम-साबद्यजान श्रली
 तहु० सरधना, जि० मेरठ
- 2 भी प्रब्रुल हफीज एवं प्रस्य लोग (प्रस्तरिती) नि॰ ग्रा॰ मौ॰ सराय, तह॰ मेरठ शहर
- 3. श्री/श्रीमती/कुमारी ' ' श्रन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके ' ' श्रिक्षोग में सम्पत्ति है)

को यह मूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के लिए कार्यवाहिया शुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के ग्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी श्राक्षेप:---

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारी स से 45 दिन की प्रविध, या तत्सम्बन्धी क्यिक्तियों पर सूचना की तामील से 30 दिश की प्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (का) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाशन की तारी का के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिसबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा प्रक्षोहरूनाक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण :---इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो धायकर श्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के भव्याय 20-क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस शब्दाय में विया गया है। अनु**सूच**े

आरामी वाक ग्राम—प्रगवानपुर पर० फिलोर, त० मवाना, जिला मेरठ

नारीखाः 18-5-84 मोहर (जी लागुन हो उसे काट दोनिए)

Ref. No. M-1912/83-84. Whereas J, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B or the Incometax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated as AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Mowana on 11-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :---

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concentment of any income or any meneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for he purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (I) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

1. Shri Mubarik Hussain, So Shri Ahmed Hussain and others Village—Lawadjan Ali, Tehsil Sardhana, Distt. Meerut.

(Transferor)

- 2. Shri Abdul Hafiz and others, Ro Mauja—Sarai, Teh. Meerut City. (Transferee)
- 3. Shri —do (Persons in occupation of the property).
- 4. Shri (Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

(a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period express later;

(b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agricultural land at village Agwanpur, Parçana, Filore, Teh. Mowana, Dist. Mecrut.

Date: 18-5-84.

Seal:

निदेश नं एम-1902/83-84:—शन. मुझे जें पी हिलोरी, श्राय-कर प्राधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात् 'उस्त श्रिधिनियम' कहा गया है) भी धारा 269-क के प्रधीन मक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पन्ति, जिसका उचित साजार मूल्य 25,000/- से ध्रिष्ठक है श्रीर जिसकी सं '5595 है तथा जो ग्रास—राफन में स्थित है (श्रीर इससे उपायद्ध अनुसूची में श्रीर पूर्ण रूप से बणित है), रजिस्ट्रीकर्ता श्रिष्ठकार, वे कार्यालय मवाना में, रजिस्ट्रीकरण श्रिष्ठित्तियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन तार्णाख 26-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्यं से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए धन्तरित की गई है श्रीर मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से श्रीक है श्रीर प्रस्तरक (अन्तरकों) श्रीर अन्तरिती (अन्तरियों) के बीच ऐसे घरनरण के लिए त्य पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्यों से मूक्त मन्तरण, लिखित भे नाक्तिक रूप से कथिस नहीं किया गया है।

- (क) ग्रन्तरण से हुई किसो भ्राय को बाबत, श्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के ग्रन्तरक के वायित्व में कमी करने मा उससे बचन में सुविधा के लिए भौर/या
- (ख) ऐसे किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों की जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) था अन-कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्निरती बारा प्रकट्ट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए

मतः मब उन्त मधिनियम की घारा 269-ग के मनुसरण में, मैं उक्त मधिनियम की घारा 269-ग की उपधारा (1) के प्रधीन, निम्न-लिखित व्यक्तियों मर्यात्:----

1. श्री० अजपाल सिंह, पुत्र शरन सिंह (अन्तरक) ग्रा० राफन, पो० मयाना, जि० मेरठ।

2. श्री मलेन्द्र कुमार, पृत्र मुखकीर (ग्रन्तरिती) मिह एवं ग्रन्य, निरु ग्राम, राफन, पोरु मवाना, जिरु—मेरठ।

3 श्रीःश्रीमती/कुमारी '''' मन्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके अधिभोग में सम्पत्ति है) को यह सुचना आरी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियां सुरू भरता है। उनत सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी आक्षेप ...

- (क) इस सूचना के राजपन्न से प्रकाशक की नारोख से ,45 दित की प्रविध, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियो पर सूचना की तासील से 30 दिन की प्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन की नारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबाद किसी भ्रत्य व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण:--इसमें प्रयुक्त शब्दों ग्रीर पदों का, जा श्रायकर मधिनियम, 1961 (1961 का 43) के मध्याय 20-के मे परिभाषित है, वही भर्ष होगा जो उस मध्याय में दिया गया है।

अनुसूर्चाः

खेत नाक ग्राम----राफन, पा० मक्षाना, जि० मेरु ।

तारी**ख** . 18-5-84

माहर

(जो लागून हो उसे साट द्यांजर्)

Ref. No. M-1902/33-S4.--Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,) have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the effice of the Registering Other at Mowana on 20-5-83 for an apparent consideration which than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :--

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer, and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. Shri Brij Pal Singh, S'o Sharan Singh, Village Rafan, P.O. Mowana, Distt. Meerut / Transferor).
- 2. Shri Satenda Kumar. So Shri Sukhbir Singh and others. Village Rafan, P.O. Mowana, Distt. Meerut.

(Transferee)

. ಕರ್ನಾರ್ ಆ ಎಫ್ ಎಸ್. ಕರ್ನಾರ್ ನಿರ್ವೇಶಕ ಮುಂದರ್ ಎಫ್ ಸಮಾಕ್ಷನಾಗಿ ಕರ್ಮಿಯ ಮುಂದು ಎಕ್ಕು ಎಂದು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಸ್ವಾಪಕ್ಷನಿಗೆ ಸಂಮು 3. Shri Satendra Kumar, So Shri Sukhbir Singh and others, vill. Rafan, P.O. Mowana, Distt. Meerut.

(Persons in occupation of the (Property).

4. Shri ---do--- (Persons whom the undersigned knows to be interested in the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigncd:---

- (a) by any of the aforesald persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Agricultural land at Village Rafan, P.O. Mowana, Distt. Meerut.

Date: 18-5-84.

Seal:

निवेश नं एम-8/84-85:----- चनः मुझे जै० पी हिलोरी, स्नायकर म्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पश्चात 'उक्त मिध-नियम' कहा गया है) की धारा 269-ख के प्रधीन मक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सस्पत्ति, जिसका उचित बाजार मत्य 25,000/- से मधिक है और जिसकी सं∘ 7625 है तथा जो मजफ्फरनगर में स्थित है (भौर इससे उपावस धनुमूची में धौर पूर्ण रूप से वर्णित है), रजिस्ट्रीकर्ना ग्रधिकारी के कार्यालय जानसठ में, रजिस्ट्रीकरण ग्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन नारीख 6-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार सृक्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए घन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृल्यं, उसके दुश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दुष्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से प्रधिक है और प्रत्यर्क (प्रस्परकों) ग्रीर श्रन्तरिती (श्रन्तरियों) के भीच ऐसे श्रन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नक्षिखित उद्देश्यों से युक्त प्रस्तरण,

(क) मन्तरण से हुई किसी भ्राय की बाबत, भ्रायकर प्रधिनियस, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के प्रन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे अस्ताने में सुविधा के लिए फ्रौर/या

लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

(खा) ऐसे किसी भाग या किसी धन या भन्य भ्रास्तियों की जिन्हें भारतीय श्रायकर ग्रंधिनियम, 1922 (1922 का 11) या ब्रायकर ब्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर प्रक्रिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ प्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, ख्रिपान में सुविधा के लिए

भ्रतः ब्रब उक्त भ्रष्टिनियम की धारा 26% के भन्मरण मे, मैं उक्त प्रधिनियम की धारा 269-घ की उप धारा (1) के प्रधीन, निम्न-लिखिन व्यक्तियों प्रयोग्:--

1. श्री चरन सिंह, पुत्र श्री कृपाराम,্ (ग्रस्ट्रकः) ग्राम⊸–म्झेड़ा, तहरू जानसठ, जि**ना**— मूजफ्फर नगर

- श्री मौल्हड सिंह मौनी, पुत्र श्री गल्टा सिंह एवं अन्य (अल्लिरिती) ग्राम-मृह्मेड्रा, पर० भ्रमा सम्मेलेड्रा तहरू **जानसङ, जिल्म् जफ्फर**,नगर
- 3 र्था/श्रीमती/कुमारी ' ः भ्रस्तरिती : : : : : : (बह : व्यक्ति, जिसके ' ' ' ग्रिशिमांग में सम्पनि हैं)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पन्ति के प्रजीन के लिए कार्यवाहियां गुरू करता हं। उक्त सम्पत्ति के प्रार्थन के सम्बन्ध में कोई भी प्राक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाणन की तारी वा से 45 दिन की श्रवधि, या तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 की भवधि, जो भी भवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस सूधना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख के 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्यन्ति में हितबद्ध किसी। प्रत्य व्यक्ति द्वारा प्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकोंगे।

स्पष्टीकरण:---इसमे प्रयुक्त शब्दों भीर पदों का, जो भायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के मध्याय में 20-क़ में परिभाषित है, वही प्रयं होगा जो उम घध्याय में विया गया है।

अनुसूची

खेती वाके ग्राम-स्केड्डा, पर० भूस्मा सम्मेलेड्डा, तह० जानसठ, जिल्लाम् जाफरनेगर

तार्रा**ख** 1 18-5-84 माहर

- S.O. M-8|84-85.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act,), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHE-DULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Jansath on 6-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :-
 - (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and or
 - (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferce for purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I, hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Shri Charan Singh, So Sri Kripa Ram, Village Mujheda, Tehsil Jansath, Distt Muzaffarnagar. (Transferor)
- 2. Molhar Singh Sami, So Shri Palta Singh Sami and others, Village Mujheda, Pargana-Bhumma Sammeleda, Teh. Jansath, District Muzaffarnagar. (Transferee)
- Shri —do— (Persons in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned—

- (a) by way, of the aforcsaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of the notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Land at Village Mujheda, Pargana-Bhumma Sammeleda; Tehsil-Jansath, Distt. Muzaffarnagar.

Date: 18-5-84

Seal:

कानपुर, 14 मई, 1984

निवेश नं ० एम-1582/83-84:— अनः मुझे जे०पी० हिलोरी, आयकर प्रिष्ठित्यम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चान 'उक्त अश्विनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चान 'उक्त अश्विनियम' कहा गया है) की धारा 269 छ के अश्वीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थायर सम्पत्ति, जिसका उचित आजार मृत्य 25,000/-मै आधिक है और जिसकी मं० एम-1582 है तथा जो असोडा मेरठ में स्थित है (भीर इससे उपावद अनुसूची में और पूर्ण क्ष्य मे वर्णित है), रिजस्ट्रीकर्ता अश्विकारी के कार्यालय गाजियाबाद में, रिजस्ट्रीकरण अश्विनयम, 1908 (1908 का 16) के अश्वीन नारीख 25-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य मे कम के वृष्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित याजार मृत्य उसके वृष्यमान प्रतिफल के पिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित याजार मृत्य उसके वृष्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिणत से अश्वित है और प्रत्यरण (अन्तरिक्त) और अन्तरिती (अन्तरियो) के वीच ऐसे अन्तरण ये लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखत उद्देश्यों से युक्त अन्तरण, लिखत मे यास्तिक रूप से काबत नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण में हुई कियी भाय की वाबत, ध्रायकर ख़िश्चिम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के धन्तरक के दायित्व में कभी करने या उसमे बखने में सुविधा के लिए प्रीर/या
- (ख) ऐसे किसी घाय या किसी धन या भ्रन्य मास्तियां की जिन्हें भारतीय माथकर भ्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या भ्रायकर स्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर भ्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भ्रन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुजिधा के लिए

भ्रतः भ्रथ उत्तर पश्चिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उत्तर प्रश्चिनियम की धारा 269 व की उपधारा (1) के भ्रधीन, निम्न-लिखित व्यक्तियों अर्थात:—

- 1. श्री पारस राम सुपूत थूसन (ग्रन्सरक) साकिस-रईसपुर, हाजनिवासी--सरावा जिला--मेरठ
- 2. श्रीमती कणमीरी देवी परनी चन्द्र किरन ध्यागी, (अन्तरिर्ता) सार्किन---श्रसोडा तहसील हापुड़, जिला---गाजियाबाद
- श्री/श्रीमती/कृमाती প্রদারী প্রদার প্রদার ক্রিলে রাজিল প্রদার দার ক্রিলে রাজিল ক্রিলের ক্র

को यह सूचना जारी करके पूर्वीक्त सम्पत्ति के श्रर्जन के लिए कार्य-वाहियां शुरू करता हूं। उक्त सम्पत्ति के श्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी श्राक्षेप:--

- (क) इस सूचना के राजपल्ल में प्रकाणन की तारीख से 45 दिन की अविधि, या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील में 30 दिन की अविधि जो भी अविधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीका व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति के द्वारा!
- (स्व) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारी स्व के 45 दिन के भीमण उक्त स्थावण सम्पत्ति में हिनवार किसी प्रन्य व्यक्ति द्वारा श्रद्धीहरूनाक्षरी के पाग लिखित में किए आ सकेंगे।

स्पर्प्टीकरण.—हममें प्रयुक्त णब्दों भीडू पदों का, जो भ्रायकर अधि-नियम, 1961 (1961 का -13) के भ्रष्ट्याय 20क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होंगा जो उस भ्रष्ट्याय में दिया गया है।

धन्मूची

ग्रन्धरिनी

वार्गिखाः (४-५-४४

मोहर:

Kanpur, the 14th May, 1984.

Ref. No. M-1582|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 266-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Ghaziabad on 25-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair

market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Shri Pars Ram Slo Ghoson Village Rasipur, Rlo Sarawa, Post Sarawa, Distt. Meerut. (Transferor)
- Shrimati Kashmiri Devi woo Chand Kiran Taygi Roo Sakin Asodha, Tehsil Hapur, Distt. Ghaziabad. (Transferee)
- 3. S|Shri (Persons in occupation of the property)

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 day, from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 15 days from the date of publication of the notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Khasra No. 18 situated at Mauja Sarawa, Distt. Meerut.

Date: 14-5-84

Seal:

निवेग नं एम-1472/83-84:—स्थानः मुझे जे ल्पी ० हिस्सोरी, श्रीयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसके पण्चात 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के श्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विण्याम करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका अखित बाजार मृत्य 25,000/— से प्रधिक है और जिसकी में ० 6129 है तथा भी डेहराइन में स्थित है (श्रीर इससे उपावत अनुसूची में और पूर्ण क्य से बणित है), रजिरहीक्षण श्रिधित्यम, 1908 (1908 का 19) के श्रधीन तारीख 18/8/83 को पूर्णित सम्पत्ति के अखित बाजार मृत्य में रूम के दृष्यमान प्रतिफल 25+G1/8 —2

कें लिए श्रन्तरित की गई है शौर भूझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथारूपॉक्ट सम्पत्ति का उचित बाजार मृल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिणत से अधिक है और अन्तरक (श्रन्तरको) श्रौर सन्तरिती (श्रन्तरियो) के दीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, तिस्तिलिखित उद्देश्यों में युक्त ग्रन्तरण, लिखित में बास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरण सं ८६ किमी आयं की बाबत, धायकर प्रधितियम, 1961 (1961 का 43) के अर्धन कर देने के अन्तरक के दासित्व में कमी करने या उसमें बचने में मुक्षिधा के लिए और/या
- (क) ऐसे किसी प्राय था किसी धन या ग्रस्य ग्रास्तियों की जिन्हें भारतीय ग्रायकर ग्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर ग्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन-कर ग्रिधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ धन्तरिती होरा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपान में भृषिधा के लिए

ग्रानः सब उनत ग्राधिनियम की धारा 269 ग के श्रनुसरण में, मैं उन्त श्रिधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के श्रश्रीन निम्मलिखित व्यक्तियों श्रश्रीन :---

- श्री वृजमोहन लाल वादेहरा, (प्रन्तरक)
 निर्द्ध-१, ब्राई क्राई पी कार्याची.
 महिकमपुर, देहरादन
- भी भार श्केश सेहगल, (अन्तरिती)
 भिश्व (/5-1) तेग बहादुर सेंड नं 2,
 वेहरावन
- 3 श्रो/श्रीमती/कुमारी श्रन्तरिती (बह व्यक्ति, जिसके ं श्रिश्रोग से सम्पन्ति हैं)

को यह सूचना जारी करके एवॉक्स शस्पत्ति के स्रजेन के लिए, कार्यवाहियां सह उत्ता है। अक्स सम्पत्ति के प्रजेत के सम्बन्ध में कीई भी ब्राखेग .--

- (क) इस अूनना के राज्यत से प्रकाशन की तारीख से 45 दिन । की नथित या तत्मम्बन्धी व्यक्तियां पर सूचना की तामील से 30 को प्रवित्त, तो भी अवश्य धाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्थीवत व्यक्तियों से के किसी व्यक्ति के द्वारा।
- (ख) इस भूचना के राजपात में प्रकाणन की नारीख़ के 4.5 दिल के भीतर अकत स्थाबर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी प्रत्य व्यक्ति इत्या अधीहस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेंगे।

स्पार्टीकरण:-इसमें प्रयुक्त जब्दों ब्रीर पदो का, जो श्रायकर अश्वि-नियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 के में परि-भाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उम अध्याय में दिया गया है।

धनुसूची

अध्यदाद मं 5/5-1, मेग बहादुर रोड, देहराद्न 1

तार्(खा . 14-5-84

मोहर:

Ref. No. M-1472 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property having a fair market

value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 16-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. Shri Brij Mohan Lal Wadehra, R o No. E-2, I.I.P Colony Mohkampur, Dehradun. (Transferor)
- 2. R. K. Sehgal, R|o 5|5-1, Teg Bahadur Road, No. 2, Dehradun,

(Transferee)

3. Shri —do— (Persons in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the property nay be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of the notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property No. 5¹5-1, Teg Bahadur Road Dehradun.

Date: 14-5-84

Seal:

निदेण नं ० एम-1777/83-84 — प्रतः मुक्ते जे. पी हिलोरी, प्रायकर प्रिधिनियम, 1961 (1961 का £3) (जिसे इसके पश्चान 'उक्त प्रधि-नियम' कहा गया है) की धारा 269 खं के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उच्चित बाजार मृत्य 25,000/~ से प्रिविक है और जिसकी सं 6557 है तथा जो देहरादून में स्थित है (बार इसमें उपायद अनुसूर्ण में ग्रांत पूर्ण क्य में वर्णित है) रिजर्म्द्रीकर्सी अधिकारी के कार्यालय देहरादून में, रिजस्ट्रीकरण प्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के प्रधीन नारीख 11-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य में क्या के दृश्यमान प्रतिक्ति के लिए प्रत्वित सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिक्ति के स्थापूर्वाक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिक्ति से, ऐसे दृश्यमान प्रतिक्ति के प्रदेश प्रतिक्त से अधिक है और अन्तरक (प्रत्तरको) और अन्तरिक्ती (प्रत्तरिक्ती) के बीच ऐसे प्रत्तरण के लिए तथ पाया स्थाप प्रतिक्ति, निम्निलिखत उद्दश्यों से युक्त प्रस्तरण के लिए तथ पाया स्थाप प्रतिक्ति का से क्षित नहीं किया गया है।

- (क) अन्तरणा से हुई किसी आय की बाबत, आयकर प्रश्वितियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर दने के अन्तरक के दायित्व में कमी करन या उससे बचने में सुविधा के लिए और,या
- (का) ऐसे किसी प्राय या किसी धन या घरय प्रास्तियों की जिन्हें भारतीय भागकर प्रक्षितियम, 1922 (1922 का 11) या भागकर प्रक्षितियम, 1961 (1963 का 13) या धनकर प्रक्षितियम, 1957 का 27) के प्रयोजनार्थ घरसरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए का, खिपाने में सुविधा के लिए

अन्त. अन्य उपन अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उन्त सिविनियम की धारा 269 व की उपधारा (1) के अधीन, निस्त-लिखित व्यक्तियों अर्थात .—→

- श्री क्रिंग ० चरनजीत सिंह, (ग्रन्तरक)
 ३-सी, कालीदास रोड,
 दहरादून।
- 2 श्री भ्राप्त नन्दन, पुत्र श्री मृज नन्दन (भ्रन्तरिती) 8, कक्वा भ्रमीर सिंह, मजफ्करनेशर
- 3. श्रीं/श्रोमती/कुमारी ग्रन्तरिती (अहं व्यक्ति, जिसके श्रिक्षणेत में सम्पत्ति है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वाक्त सम्पत्ति में प्रार्जन के लिए कार्य-वाहिया गुरू करना हूं। उक्त सम्पत्ति के प्रार्जन के सम्बन्ध में कार्ड भी प्रार्क्षण:-

- (क्) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाणन की तारी का से 45 दिन की प्रविध, या तत्मबधी व्यक्तियों पर सूचना की नामील से 30 की ग्रविध, जो भी श्रविध बाद में भमाप्त होती हो, वे भीतर पुर्वोचन व्यक्तियों में में किसी व्यक्ति के हारा।
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाणन की तारीख के 45 दिन के भीवर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हितबद्ध किसी अस्य व्यक्ति हारा प्रधोहस्वाक्षरी के पास लिखित में किए जा सकेगे।

स्पष्टीकरण —-इसमे प्रयुक्त शब्दो और पदो का, जो श्रायकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के श्रध्याय 20 क में पेरिभाषित है, बही श्रर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

प्रनसुधी

जायदाद न ७ डी (पुराना) भ्राष्टले हाल नं । ! (नया), भ्राप बी उभार सेन रोड, देहरादून।

ना**रीख** 14-5-84

मं(हर.

Ref. No. M-1777|83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act.), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000|- and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 11-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

- (a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- Shri Brig, Charanjit Singh, 2-C, Kalidas Road, Dehradun. (Transferor)
- Shri Arun Nandan, So Shri Brij Nandan, 8, Kacha Ameer Singh, Muzaffarnagar.
 (Transferce)
- 3. Shri —do— (Persons in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from

the date of publication of the notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property No. 9-D (Old) New No. 14, R. B. Uggar Sain Road, Dehradun.

Date: 14-5-84

Seal:

(मण्ड बीम्प)

कानपुर, 11 मई, 1984

निवेण नं एम 1477/83-84 -- चन मुझे जें ज्यी हिलारी, प्रायंकर धिंधिनयम, 1961 (1961 का 43) (जिले इसके पश्चान 'उंकर अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ज के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को यह विषयाम करने का कारण है कि स्थायर सस्पत्ति, जिसका उचित बाजार मृत्य 25,000/- से प्रधिक है और जिसकी सं 6458 है तथा जो देहरादून में स्थित है (और इससे उपावड प्रमुख्यों में भीर पूर्ण रूप है वर्णिन है), राजस्ट्रीकर्ना प्रधिकारी के कार्यालय रेहरादून से, राजस्ट्रीकरण प्रधितियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन नारीख 30-8-83 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मृत्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है भीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल है, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्नह प्रतिणत से प्रधिक भीर अन्तरक (प्रस्तरक) भीर अन्तरित (अन्तरियो) के बीच ऐसे प्रस्तरण के लिए त्रास्तरकों) भीर अन्तरित (अन्तरियो) के बीच ऐसे प्रस्तरण के लिए त्रास्तरकों) भीर अन्तरित (अन्तरियो) के बीच ऐसे प्रस्तरण के लिए त्रास्तरिक रूप में कथित नहीं किया गया है।

- (क) फ्रन्मरण से हुई थिसी श्राय की बाबस, श्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कर देने के श्रन्तरक के दायित्व में कभी करने या उसमें बचने से सुविधा के लिए और/या
- (ख) ग्रेमे किमी ग्राय या किमी अन या ग्रन्य ग्रास्तियों की जिन्हें भारतीय ग्रायकर ग्राधिनियम 1922 (1922 का 11) या ग्रायकर ग्राधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धम-कर ग्राधिनियम, 1957 का 27) के प्रयोजनार्थ ग्रन्थिति द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए श्रम, छिपाने मे मुविधा के लिए
- अनः श्रव उक्त अधिनियम की धारा 269 ग के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269 घंडी उपधारा (1) के अधीन निम्नलिखिक व्यक्तियों अर्थात
- श्री चमन लाल, पुन्न श्री सतराम (श्रन्तरक)
 दास, नि॰ १।३, मर्छली बाजार,
 देष्टराहुन
- 2. श्री ग्रोम प्रकाम एव श्रन्य लोग, (श्रन्तरिनी) निवासी 14, रेस कोर्स, दहराधून
- 3. श्री/श्रीमर्त /कृमारी अस्तरिती (वह व्यक्ति, जिसके आंधभीत में सम्पत्ति)

- को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के श्रर्जन के लिए कार्यवाहियां एक करता हू। उक्त सम्पत्ति के श्रर्जन के सम्बन्ध में कोई सी श्राक्षण .---
- (क) इस सूचना के राजपव में प्रकाशन की नारीका से 45 दिन की श्रवधि, या नत्सबंधी व्यक्तियों पर सूचना की जामील से 30 दिन की अथित, जो भी श्रविध बाद से समाप्त होती हो. के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा।
- (ख) इस सूचना के राजपल में प्रकाणन की तारीख के 45 दिन के भीतर उपन स्थावर सम्पत्ति में हितबढ़ किसी प्रस्य व्यक्ति द्वारा अधीष्ट्रस्ताक्षरी के पास लिखित में किए जा सकरों।

स्पर्प्टीकरण— इसमें प्रयुक्त अब्दों श्रीर गर्दों का, जो श्रायकर प्रधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के श्रष्टयाय 20क में परिभाषित है, वहीं अर्थ होगा जो उस श्रष्टयाय में दिया गया है।

ग्रन्थुओ

जायदाद न० 3 मह्यती बाजार, वर्तमान नं० 12 (3) ग्रन्थरी मार्ग, देहरादून (

> जर्पार हिसारी, सक्षम प्राधिकारी, (सहायक आयक्षर भ्रायुक्त, निरीक्षण) (भ्रजन रेज), कानपुर

तारीम १११-५-४४ महिर

(जा क्यू न हा उने हाट दोलिए)

Camp of Meerut

Kanpur, the 11th May, 1984

Ref. No. M-1477 83-84.—Whereas I, J. P. Hilori being the Competent Authority under section 269-B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the said Act.), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing number AS PER SCHEDULE situated at AS PER SCHEDULE (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Dehradun on 30-8-83 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) Facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and or

(b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for purposes of the Indian Income tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269-C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice under sub-section (1) of section 269-D of the said Act to the following persons, namely:—

- 1. Shri Chaman Lal, So Shri Sat Ram Dass, Ro 113, Machli Bazar, Dehradun (Transferor)
- 2. Shri Om Prakash and others, R|o 14, Race Course, Dehradun. (Transferee)
- 3. Shri —do— (Persons in occupation of the property).

Objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, which we period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of publication of the notice in the Official Gazette.

Explanation: The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property No. 3, Machli Bazar, Now 129|3, Ansari Marg, Dehradun.

J. P. HILORI,
Competent Authority
(Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax, Acquisition Range KANPUR)

Date: 11-5-84.

Seal: